चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य में महानगरीय बोध

हिन्दी विषय की पी-एच.डी. उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशिका

डॉ. सुमन शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग,
कला संकाय

शोधार्थी

सोनिया यादव

हिन्दी विभाग-कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा-282005

2022

शोध परिचय :

साहित्य और समाज का वह गहरा सम्बन्ध है, जैसे आत्मा का शरीर से। समाज में जो घटित होता है उसकी अभिव्यक्ति साहित्य में अवश्य होती है। साहित्य सामाजिक-परिस्थितियों की देन होता है, देशकाल में भेद पड़ने पर सामाजिक परिस्थितियों में जो भिन्नता दिखाई पड़ती है। उसका अविलम्ब प्रभाव साहित्यिक रूप पर पड़ता है। साहित्य के इसी गुण धर्म पर दृष्टिपात करते हुए आलोचकों ने साहित्य को 'समाज का दर्पण' कहा है।

साहित्य में समय-समय पर अनेक विधाओं का आविर्भाव होता है और पुरानी विधा नवीन रूप धारण करती है। इनमें जो विधाएँ आधुनिक जीवन के यथार्थ की अभिव्यक्ति के प्रति अनुकूल एवं बोधगम्य होने के कारण सर्वाधिक लोकप्रिय रही हैं वह है कथा-साहित्य। जिसमें कहानी और उपन्यास समाहित होते हैं। समाज का जितना बारीकी से अध्ययन उपन्यास व कहानी मे होता है उतना किसी अन्य विधा में नहीं।

'महानगर' शब्द अंग्रेजी के मेट्रोपोलिटन शब्द का पर्यायवाची रूप है। मेट्रोपोलिटन शब्द की व्युत्पत्ति ग्रीक भाषा के मेट्रोपोलिस शब्द से हुई है। यह 'मेटर' तथा 'पोलिस' शब्दों के योग से मिलकर बना है। ग्रीक भाषा में मेट्रोपोलिस का अर्थ मातृनगर के रूप में समझा जाता है। 'मेटर' तथा 'पोलिस' शब्द का अर्थ क्रमश: 'माता' एवं 'नगर' है।

'मानक हिन्दी कोश' के अनुसार 'महानगर' का अर्थ है- महत् नगर, बहुत बड़ा नगर। इसी कोश में 'बोध' शब्द का अर्थ है, "ज्ञान, जानकारी।" उल्लेखित अर्थों से 'महानगरीय बोध' का सरल अर्थ लगा सकते हैं - महानगर की परिधि में स्थित सभी पक्षों का सर्वांगीण ज्ञान या उचित जानकारी।

डॉ. नीला बोर्वणकर के अनुसार- 'साहित्य' में महानगरों का सर्वांगीण वर्णन महानगरीय बोध कहलाता है।

भारत के सामाजिक परिवर्तन के इतिहास में उन्नीसवी तथा बीसवीं शताब्दी औद्योगिक क्रांति की शताब्दी मानी जाती है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप नगरों एवं महानगरों का आविर्भाव हुआ। महानगरों की भागदौड़ भरी व्यस्तता में व्यक्ति निरंतर आत्मकेन्द्रित होता गया, परिवेश से संबंध स्थापित न होने के कारण आत्मनिर्वासित हुआ तो रिश्तों का टूटना उसे और भी अकेला करता जा रहा है। महानगर आज जनसंख्या वृद्धि, भुखमरी, घुटन, अकेलापन, अपराधीकरण जैसी समस्याओं के केन्द्र बनते जा रहे हैं।

महानगरीय व्यक्ति दूसरों से ऊपर उठने और बहुत पाने की चाह में दौड़ रहा है । महानगरीय जीवन बाहर से जितना सरल, सहज, आकर्षक एवं सुखमय दिखाई देता है, उतना है नहीं । पश्चिमी प्रभाव को तोड़-मरोड़कर धारण करने की प्रवृत्ति ने महानगरीय जीवन को आंतरिक और बाह्य दोनों स्तर पर बुरी तरह झकझोर दिया है । वैज्ञानिक विकास नगर-महानगरीयकरण और औद्योगीकरण की तीव्र प्रक्रिया में मशीनी सभ्यता से घिरा हुआ हर संवेदनशील व्यक्ति तनाव ग्रस्त है । महानगरीय दबाबों के कारण उपजी अनेक विसंगतियाँ उसकी जटिल मानसिक स्थितियों को उद्घाटित करती हैं । व्यक्ति की चिंतन प्रणाली एवं मूल संवेदनाओं के साथ आपसी रिश्तों को प्रभावित कर विज्ञान एवं यांत्रिकी ने उसे अकेला कर अजनबी बनाया है। महानगरीय व्यक्ति दु:ख-दर्द, पीड़ा, तनावग्रस्त होने के कारण इतना विवश हुआ है कि वह आत्महत्या जैसे अपराध की ओर उन्मुख हुआ है ।

भारतीय महानगरों में उठी उथल-पुथल एवं क्रांतिकारी परिवर्तन की प्रकिया को आधुनिक युग की महिला कथाकार चित्रा मुद्गल ने स्वयं महानगर में रहकर यह महसूस किया कि पश्चिमी सभ्यता का अन्धानुकरण तथा फैशन परस्ती के परिणामस्वरूप महानगरों में नये-नये प्रतिमान उभर कर आ रहे हैं । परिणामस्वरूप चित्रा मुद्गल ने स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में स्वच्छंदता, पीढ़ी में बढ़ता अंतर, अकेलापन, बेरोजगारी, घुटन, परिवारों का विघटन एवं राजनीतिक भ्रष्टाचार आदि समस्याओं का चित्रण अपने कथा-साहित्य का कथ्य बना दिया ।

चित्रा मुद्गल ने ‘एक जमीन अपनी’ उपन्यास की रचना कर साहित्य को एक नई भाव-भूमि प्रदान की। विज्ञापन जगत की चकाचौंध भरी पृष्ठभूमि में इसकी रचना हुई । विज्ञापन जगत में पिसती हुई नारी, जिसे भूख या घर की आर्थिक जरूरतें विज्ञापन की मंडी तक खींच लाती हैं । नारी को एक वस्तु बनाकर उसकी अस्मिता खो देने का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है, उपन्यास मुंबई जैसे महानगर में व्याप्त तनावपूर्ण जीवन को उभारता है । साथ ही ‘गिलीगडु’ उपन्यास की रचना कर उसमें बदलते मूल्यों, आधुनिक व्यस्त जीवन में अपनी ही संतान द्वारा उपेक्षित एवं अकेले बन पड़े वृद्ध के दुख दर्द को व्यक्त किया गया है । महानगरीय जीवन के मध्यवर्गीय और निम्न चरित्रों के साथ उनके अन्तर्द्वन्द्वों का विश्लेषण एवं परिवेश में व्याप्त संत्रास, कुंठा, यांत्रिकता आदि का बेबाक चित्रण चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य में देखने को मिलता है ।

जीवन परिचय :

बहुआयामी प्रतिभा की धनी चित्रा मुद्गल का जन्म 10 दिसम्बर 1944 को चेन्नई में हुआ । उनका पैतृक स्थान निहाली खेड़ा जिला उन्नाव (उ. प्र.) है । चित्रा मुद्गल की प्रारंभिक शिक्षा पैतृक गाँव निहाली खेड़ा से सटे गाँव भरतीपुर की कन्या पाठशाला में सम्पन्न हुई । पूना बोर्ड से हायर सेकन्ड्री की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् स्नातक मुंबई विश्वविद्यालय तथा स्नातकोत्तर पत्राचार पाठ्यक्रम के द्वारा एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय से सम्पन्न की । चित्रकला में गहरी अभिरुचि के कारण जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स से फाइन आर्ट्स का भी अध्ययन किया । सौमेया कॉलेज (मुंबई) में बी. ए. में अध्ययन करते समय ही 'टाइम्स ऑफ इंडिया' की पत्रिका 'सारिका' के उपसंपादक अवध नारायण से अंतरजातीय प्रेम विवाह किया । चित्रा मुद्गल ने कहानी एवं उपन्यास लेखन के अतिरिक्त पत्रकारिता, फिल्म निर्माण से संबंधित अन्य क्षेत्रों में भी कार्य किया है। वह लेखिका होने के साथ प्रतिष्ठित समाज सेविका भी है । चित्रा मुद्गल का कथा साहित्य इस प्रकार है-

कहानी संग्रह-

जहर ठहरा हुआ (1980), लाक्षागृह (1982), अपनी वापसी (1983), इस हमाम में (1986), ग्यारह लम्बी कहानियाँ (1987), जगदंबा बाबू गाँव आ रहे है (1992), चर्चित कहानियाँ (1994), मामला आगे बढ़ेगा अभी (1994), जिनावर (1996), लपटें (2003), केंचुल (2001), भूख (2001), बयान (2004), दस प्रतिनिधि कहानियाँ (2005), पेंटिंग अकेली है (2014), आदि-अनादि भाग 1,2,3 (2007) ।

उपन्यास-

एक जमीन अपनी (1990), आवां (1999), गिलीगडु (2002), पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा (2016)।

संपादित पुस्तकें -

असफल दाम्पत्य की कहानियाँ (1987), टूटते परिवारों की कहानियाँ (1987), दूसरी औरत की कहानियाँ (1987), भीगी हुई रेत (1989), देह-देहरी (2003) ।

पुरस्कार एवं सम्मान :

1. वर्ष 1994 में उपन्यास 'एक जमीन अपनी' के लिए 'फणीश्वर नाथ रेणु' साहित्य पुरस्कार से सम्मानित वर्ष 1995 में हिन्दी अकादमी द्वारा 'साहित्यकार सम्मान' से विभूषित।
2. वर्ष 2000 में 'आवां' के लिए सहस्त्र सहस्त्राब्दी का पहला अन्तरराष्ट्रीय 'इन्दु शर्मा कथा सम्मान' यूनाइटेड किंगडम द्वारा प्रदान किया गया।
3. वर्ष 2003 में 'आवां' के लिए के. के. बिरला फाउन्डेशन का प्रतिष्ठित 'व्यास सम्मान' से सम्मानित।
4. वर्ष 2018 में 'पोस्ट बॉक्स न. 203 नाला सोपारा' प्रतिष्ठित 'साहित्य अकादमी' से पुरस्कृत।

शोध विषय की प्रेरणा एवं चयन :

साहित्य के किसी भी विषय को अपने शोध का विषय बनाने से पूर्व उसके प्रतिमानों से परिचित होना अत्यंत आवश्यक है। शोधार्थी को विषय चयन की प्रेरणा शोध-निर्देशिका डॉ. सुमन शर्मा से मिली है। शोधार्थी शोध से सम्बन्धित विषय की सूची उनके पास लेकर गयी, तब उन्होंने शोधार्थी को चित्रा मुद्गल के साहित्य को पढ़ने के लिए प्रेरित किया। तत्पश्चात शोधार्थी ने उनका साहित्य पढ़ना प्रारंभ किया, उनकी रचनाओं के माध्यम से महानगरों में होने वाला स्त्री शोषण, यांत्रिक जीवन, अकेलापन, बदलते मूल्य, घुटन, बेरोजगारी, भिक्षावृत्ति जैसी समस्याओं को बारीकी से समझने का अवसर प्राप्त हुआ। चित्रा मुद्गल ने अपनी रचनाओं के माध्यम से महानगरीय जीवन का चित्रण मात्र नहीं किया, बल्कि उस मानव समाज को दमित करती समस्याओं के प्रति 'रेड सिग्नल' भी दिया है। जीवन के संकुचित दायरे में व्यक्ति के अकेले पड़ने की त्रासदी भयावहता के साथ अभिव्यक्त हुई है। तत्पश्चात् शोधार्थी ने शोध-निर्देशिका डॉ. सुमन शर्मा से शोध विषय से सम्बन्धित वार्ता की, आपसी वार्तालाप के पश्चात् शोधार्थी के शोध का विषय **"चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य में महानगरीय बोध"** सुनिश्चित हुआ है।

शोध कार्य का उद्देश्य एवं महत्त्व :

मनुष्य के किसी भी कार्य को करने के पीछे एक विशेष उद्देश्य विद्यमान रहता है, उस उद्देश्यता की पूर्ति करने के लिए वह खोजबीन कर अपने लक्ष्य की प्राप्ति करता है। "चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य में महानगरीय बोध" को

शोध का मुख्य बिंदु बनाया गया है। चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य में महानगरीय जीवन एवं परिवेश की विराटता का बोध होता है, उनके कथा साहित्य में विविध पक्षों (सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक) का संस्पर्श करना एवं उनको आधुनिक संदर्भों से जोड़कर प्रस्तुत करना, अभिव्यक्त अंश के माध्यम से वर्तमान महानगरीय परिवेश की यथार्थ रूप में अभिव्यक्ति करना प्रस्तुत शोध का उद्देश्य होगा, साथ ही गाँव से नगरों की ओर पलायन कर रहे ग्रामीण लोगों को महानगरीय समस्याओं से अवगत कराना भी इस शोध का उद्देश्य होगा।

प्रस्तावित शोध की परिकल्पना :

1. आधुनिकता की चमक में मानवीय मूल्यों में आए बदलाव को उजागर करना।
2. चित्रा मुद्गल के व्यक्तित्व का उनके कथा-साहित्य पर प्रभाव।
3. महिला साहित्यकार का समाज के प्रति दृष्टिकोण।
4. साहित्यकार के कथा-साहित्य में महानगरों में होने वाली समस्याओं से अवगत कराना।
5. चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य में स्थापित बेहतर समाज के उद्देश्यों का विश्लेषण करना।
6. चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य के माध्यम से तत्कालीन परिवेश से परिचित कराना।

पूर्व में हुए कार्यों का विवरण :

चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य को आधार बनाकर शोधार्थी की दृष्टि से देखने पर उनके कथा-साहित्य पर निम्न शीर्षकों के अंतर्गत शोध कार्य संपन्न किए जा चुके हैं-

1. चित्रा मुद्गल का कथा-साहित्य संवेदना और शिल्प, श्री रंजिनी वी., केरल विश्वविद्यालय, 2008.
2. चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य में नारी, प्रकाश नवनितराव सावते, स्वामी रामानंद तीर्थ मराठावाड़ा विश्वविद्यालय, 2015.
3. चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, बारीआ सरोज बहन एम., सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, 2019.
4. चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य का शिल्प वैशिष्ट्य, रुचिकीर्ति, छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय, 2014.

शोध कार्य की मौलिकता :

शोधार्थी द्वारा किया गया प्रस्तुत शोध कार्य आगामी समय में उपयोगी, पूर्णत: मौलिक एवं नवीन सिद्ध हो ऐसा शोधार्थी का प्रयास रहेगा । शोध और समीक्षा के क्षेत्र में प्रस्तुत शोध प्रबंध संतुलित दृष्टि का प्रयास मात्र होगा । प्रस्तुत शोध के द्वारा एक नवीन दृष्टि साहित्य और समाज को देने का शोधार्थी का यह क्षुद्र प्रयास भर रहेगा ।

शोध प्रविधि :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । मनुष्य होने के कारण उसमें जिज्ञासु प्रवृत्ति पनपती रहती है। जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए वह निरंतर छान-बीन करता है तथा छान-बीन के समय शोध की विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग करता है। प्रस्तावित शोध कार्य को करते समय शोध की मौलिकता के साथ उसकी प्राथमिकता को स्मृति में रखते हुए विभिन्न संदर्भ ग्रंथ, शब्दकोश को देखते हुए वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, समाजशास्त्रीय, तुलनात्मक प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा । अत: विषय से संबंधित लेखिका से विचार-विमर्श के साथ साक्षात्कार और प्रश्नावली शोध प्रविधि का प्रयोग करते हुए शोध विषय एवं शोध कार्य को सार्थक बनाने का प्रयत्न किया जाएगा । संदर्भ ग्रंथ, आधार ग्रंथ, शब्दकोश एवं पत्र-पत्रिकाओं के प्रयोग द्वारा शोध कार्य की तथ्यपरक सामग्री को एकत्रित किया जाएगा ।

साहित्य सर्वेक्षण :

शोध विषय से संबंधित जानकारी विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों के माध्यम से प्राप्त की गई है- जिनका विवरण निम्नवत् है-

1. दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा
2. केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
3. डॉ. भीमराव अम्बेड़कर विश्वविद्यालय, आगरा

प्रस्तावित रूपरेखा

प्रथम अध्याय : 1.1 महानगरीय बोध : सैद्धांतिक विवेचन

1.2 चित्रा मुद्गल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय : चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य में सामाजिक परिवेश

2.1 पारिवारिक विघटन

2.2 अकेलापन

2.3 घुटन एवं तनाव

2.4 संवेदनहीनता

2.5 अशिक्षा

2.6 स्त्री का संघर्ष

2.7 नई एवं पुरानी पीढ़ी का संघर्ष

तृतीय अध्याय : **चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य में आर्थिक परिवेश**

3.1 औद्योगिक विकास

3.2 पूँजीपति एवं शोषित वर्ग

3.3 निर्धनता

3.4 बेरोजगारी

3.5 अपराधवृत्ति

चतुर्थ अध्याय : **चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य में राजनीतिक परिवेश**

4.1 राजनीतिक भ्रष्टाचार

4.2 राजनेताओं की अवसरवादिता एवं स्वार्थी प्रवृत्ति

4.3 भ्रष्ट प्रशासन

4.4 राजनेताओं एवं नौकरशाही की भयावह स्थिति

4.5 जनता का शोषण एवं संघर्ष

पंचम अध्याय : **चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य में धार्मिक-सांस्कृतिक परिवेश**

5.1 मूल्य विघटन

5.2 संस्कृति का पतन

5.3 साम्प्रदायिकता

5.4 धर्म का परिवर्तित रूप

5.5 पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण

षष्ठ अध्याय : **चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य का भाषायी विवेचन**

6.1 भाषा एवं शैली

6.2 शब्दस्तरीय विश्लेषण

6.3 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

6.4 प्रतीक एवं बिम्ब

सप्तम अध्याय : महानगरीय बोध के परिप्रेक्ष्य में समकालीन कथाकारों एवं चित्रा मुद्गल का तुलनात्मक विश्लेषण

उपसंहार :

परिशिष्ट :

(क) आधार ग्रंथ सूची

(ख) संदर्भ ग्रंथ सूची

(ग) शब्दकोश

(घ) साक्षात्कार

(ङ) प्रश्नावली

(च) पत्र-पत्रिकाएँ

(छ) बेवसाइट्स

नोट-शोध निर्देशिका के सुझाव एवं निर्देश से शोध रूपरेखा में 20 प्रतिशत परिवर्तन संभव है।

आधार ग्रंथ

उपन्यास

1. एक जमीन अपनी, मुद्गल चित्रा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019.
2. आवां, मुद्गल चित्रा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019.
3. गिलीगडु, मुद्गल चित्रा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019.
4. पोस्ट बॉक्स न.-203 नाला सोपारा, मुद्गल चित्रा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020.

कहानी संग्रह

1. जहर ठहरा हुआ, मुद्गल चित्रा, अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 1980.

2. लाक्षागृह, मुद्गल चित्रा, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली, 1982.

3. अपनी वापसी, मुद्गल चित्रा, सम्भावना प्रकाशन, हापुड़ (उ. प्र.), 1983.

4. इस हमाम में, मुद्गल चित्रा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1986.

5. ग्यारह लम्बी कहानियाँ, मुद्गल चित्रा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1987.

6. जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं, मुद्गल चित्रा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1992.

7. चर्चित कहानियाँ, मुद्गल चित्रा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994.

8. मामला आगे बढ़ेगा अभी, मुद्गल चित्रा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994.

9. जिनावर, मुद्गल चित्रा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996.

10. केंचुल, मुद्गल चित्रा, साहित्य प्रकाशन, आगरा (उ. प्र.), 2001.

11. भूख, मुद्गल चित्रा, ज्ञानगंगा प्रकाशन, जयपुर (राजस्थान), 2001.

12. लपटें, मुद्गल चित्रा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003.

13. बयान, मुद्गल चित्रा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004.

14. दस प्रतिनिधि कहानियाँ, मुद्गल चित्रा, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005.

15. पेंटिंग अकेली है, मुद्गल चित्रा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014.

16. आदि- अनादि भाग-1,2,3, मुद्गल चित्रा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018

सहायक ग्रंथ

1. आधुनिक कथा-साहित्य में चित्रित औद्योगीकरण, पतसारिया डॉ. रेखा, चिंतन प्रकाशन, कानपुर (उ. प्र.), 2015.

2. उपन्यासों के झरोखे से चित्रा मुद्गल, शर्मा डॉ. करूणा, शिल्पायन पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2015.

3. चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य में युग चिंतन, मिश्रा डॉ. अर्चना, भारतीय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2018.

4. नव विमर्श नव चिंतन, दौलतकर डॉ. नीता, पोवार डॉ. राजेन्द्र, शुभम पब्लिकेशन, कानपुर, 2018.

5. बदलते परिप्रेक्ष्य और हिन्दी उपन्यास, जैन डॉ. बीना, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006.

6. भूमण्डलीकरण का अमानवीय चेहरा, दीक्षित डॉ. प्रभा, सरस्वती प्रकाशन, कानपुर (उ. प्र.). 2016.

7. राजेन्द्र यादव के कथा-साहित्य में महानगरीय जीवन, ढाणकीकर डॉ. शोभा, विकास प्रकाशन, कानपुर (उ. प्र.), 2013.

8. स्त्री, परंपरा और आधुनिकता, सं. राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010.

9. समकालीन साहित्य बाजार और मीडिया, पाण्डेय डॉ. मायाप्रकाश, चिंतन प्रकाशन, कानपुर (उ. प्र.), 2014.

10. समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में जनचेतना, लोखंडे डॉ. अरुणा, विकास प्रकाशन, कानपुर (उ. प्र.), 1996.

11. हिन्दी लघु उपन्यासों में चित्रित महानगरीय सभ्यता, शर्मा डॉ. रेणुका, अभिनव प्रकाशन, जयपुर (राजस्थान), 2010.

12. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल, मयूर बुक्स, नई दिल्ली-2018.

13. 21वीं सदी के साहित्यिक विमर्श, श्री दौलतकर डॉ. नीता, विनय प्रकाशन, कानपुर (उ. प्र.), 2020.

शब्द कोश :

1. मानक हिन्दी कोश खण्ड-3, संपादक वर्मा रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1964.

2. राजपाल हिन्दी शब्दकोश, बाहरी डॉ. हरदेव, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 2016.

3. हिन्दी साहित्य कोश भाग-1, वर्मा डॉ. धीरेन्द्र, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी (उ.प्र.), 1985.